दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IX (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/18(JS)–HL-**HL9**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Dilkhush

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 09, 11/09/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]: 1 1 3 0 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिंदी का प्रारंभिक स्वरूप

बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा से निष्पन्न सिद्ध परंपरा व उसके विरोध में कलित गोरखनाथ द्वारा प्रदत्त नाथ साहित्य परंपरा में आरंभिक हिन्दी का स्वरूप व्याकरणिक, व भाषागत स्तर पर स्पष्ट दिखाई देता है।

इस समय की भाषा में अपभ्रंश, अवहट्ट व खड़ी बोली का मिश्रण दिखाई देता है जिसे 'संध्या-भाषा' भी कहते हैं।

"नौ लख पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा"
ऐसो मन लै जोगी खेलै, तबअंतरि बसै भंडारा,"

उपर वर्णित दोहे में 'नौ', जो कि एक संख्यावाची विशेषण है, और आज भी खड़ी बोली में प्रचलित है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा चर्पटीनाथ, जलंधरनाथ आदि के काव्यों में भी खड़ी बोली का स्वरूप दिखाई देता है।

"जोगी सोई जाणिये, जग तैं रहे उदास
तत निरंजण पाइये, कहे मछिन्द्रनाथ।"

इन पंक्तियों में 'पाइये', 'पाना', 'उदास' आदि शब्दों का मिलना, खड़ी बोली की उपस्थिति का द्योतक है।

इसी प्रकार कारक में 'हिं' विभक्ति आदि का प्रयोग व सर्वनामों का आरंभिक स्वरूप जैसे 'तुम्हें', 'ते' आदि नाथ साहित्य की 'संध्या-भाषा' में मिलते हैं।

अतः खड़ी बोली की पृष्ठभूमि यहीं से बनना शुरू हो गई थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में डा. रघुवीर का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~शब्द~~ किसी भी भाषा के मानकीकरण हेतु उसकी शब्दावली का समन्वयात्मक दृष्टि से विकास होना जरूरी है क्योंकि शब्दों के प्रयोग व सहजता से भाषा प्रयोग को बढ़ावा मिलता है।

डॉ. रघुवीर ने हिन्दी भाषा के शब्दावली कोश में अप्रतिम योगदान दिया, यहाँ तक कि वे सभी शब्दों का हिन्दी मात्र रूप चाहते थे, जैसे रेलगाड़ी – लौहपथगामिनी, व ~~रेलगाड़ी~~ सिगनल को – लौहपथगामिनी आवक-जावक सूचक यंत्र, स्टेशन मास्टर आदि का हिन्दी में अनुवाद।

उन्होंने भारत की अन्य आर्यभाषाओं से भी शब्दों को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ग्रहण किया जिससे पारिभाषिक शब्दावली कोश में वृद्धि हुई।

विज्ञान, गणित आदि विषयों के लिए उपयुक्त होने वाले शब्दों को भी डा. रघुवीर ने संशोधित किया।

हालाँकि अतिरेकवादी हिन्दी अनुवाद की प्रवृत्ति ने उनकी कुछ सीमाएँ बना दी, ऐसे अनुवाद जो प्रयोगशीलता की दृष्टि से अप्रचलित हो गये, तकनीकी व शब्दावली आयोग ने उनकी शब्दावली को कोश में शामिल किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अंतर

~~राष्ट्रभाषा~~ अगर पृष्ठभूमि के तौर पर दृष्टि डालें तो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, बीसवीं सदी के आरंभ में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता पड़ी जो भारत के आत्मसम्मान का परिचायक बन सके, वहाँ के लोगों की भावनाओं में एकता का आदान-प्रदान कर सके।

जिस प्रकार सांकेतिक तौर पर राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान व राष्ट्रगीत, वैसे ही राष्ट्रभाषा भी सांकेतिक तौर पर अस देश की एकता को व्यक्त करती है। जैसे फ्रांस की फ्रेंच, ब्रिटेन की अंग्रेजी जर्मनी की जर्मन इत्यादि।

भारत ~~की~~ में आठवीं अनुसूची के अन्तर्गत हिन्दी सहित अन्य २१ भाषाओं को राष्ट्रभाषा का दर्जा मिला है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जहाँ तक राजभाषा का प्रश्न है- संविधान द्वारा प्रदत्त ऐसी भाषा जिसका प्रयोग सरकारी कामकाज, प्रशासनिक मामलों में, संसद व विधानमंडलों व न्यायपालिका में प्रयोग हो।

हालाँकि स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले हिन्दी के राजभाषा होने पर कोई आपत्ति नहीं थी लेकिन स्वतंत्रतापश्चात् अंग्रेजी को भी हिन्दी के साथ राजभाषा माना गया। अनुच्छेद 343 से 351 व अनुच्छेद 120 एवं 210 में राजभाषा से संबंधित विभिन्न प्रावधान शामिल हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) 'अवधी' बोली

'अवधी' अयोध्या क्षेत्र, लखनऊ, फैजाबाद, रायबरेली, सुल्तानपुर आदि में प्रचलित लोक भाषा है जिसका विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से माना गया है। यह पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोली है।

साहित्यिक तौर पर 'मुल्ला दाऊद' कृत 'चंदायन', पं. दामोदर कृत 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' आदि में प्रारंभिक स्वरूप व जायसी कृत 'पद्मावत' व तुलसीदास जी की 'रामचरितमानस' में परिपक्वता मिलती है।

"दाऊद काबि सो चांदा गाई
जो यह पढ़ा सोगा मुरझाई।" (आरंभिक स्वरूप)

ध्वनिगत विशेषता
व > ब, वेद > बेद
ड़ > र — सड़क > सरक
ण > न, आदि, पाणि > पानी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरणगत विशेषता -

संज्ञा के तीन रूप लरिका, लरिकवा, लरकौना

'हि' विभक्ति का प्रयोग,

~~मुख्य~~ एकवचन से बहुवचन के लिए 'न, आनी' प्रत्यय ~~बा~~ बात > बातन

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग के लिए '-ई, आनी' प्रत्यय ठाकुर > ठकुरानी
जेठ > जेठानी

शब्दों में तद्भव व देशज शब्दों की बहुलता।

'अवधी' बोली जायसी के 'पद्मावत' में ठेठ रूप में दिखाई देती है -

"जेठ उठे जग बहै लुवाता। उठे बवंडर धिरै पहारा।"

या

"मानुष प्रेम भएउ बैकुण्ठी, नहीं तो काह छार एक मुठी"

लेकिन रीतिकाल में ब्रजभाषा के वर्चस्व ने अवधी को क्षेत्रीय सीमितता की परिधि में ही बांध दिया, व आधुनिक युग में खड़ी बोली ने अवधी भाषा का क्षेत्र विशेष ~~की~~ की बोली बना दिया। लेकिन अभी भी 'रामचरितमानस' जैसी कालजयी रचनाओं के माध्यम से विदेशों तक में प्रचलित है और रहेगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) भाषा और बोली में अंतर

सभ्यता के विकास की प्रक्रिया के अनुरूप ही बोली व भाषा का विकास होता है। अगर बोलियों के तौर पर देखा जाए तो भारत में लगभग 716 बोलियां प्रचलित हैं लेकिन भाषाएँ 22 ही हैं।

बोली एक क्षेत्र विशेष, समूह विशेष से सम्बन्ध रखती है जिसका कोई निश्चित व्याकरण व शब्दकोश नहीं होता है, यहाँ तक कि बोली को लिखित रूप में प्रयोग करना थोड़ा जटिल कार्य है, क्योंकि व्याकरणिक विधान मानकीकृत नहीं होता।

लेकिन बोलियों की विविधता व व्यापकता से ही भाषा का निर्माण होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषा का प्रयोग लेखन कार्य, व्याकरणिक सुसंबद्ध व मानकीकृत शब्दावली का प्रयोग आदि।

उदाहरण के तौर पर अवधी, ब्रज पहले बोलियाँ थी, अब भाषा का रूप ले चुकी, लेकिन मारवाड़ी, मेवाड़ी ढूंढाड़ी, राजस्थानी भाषा में प्रचलित बोलियाँ हैं।

अतः भाषा व बोली साहित्यिक व व्याकरणिक आधार पर एक-दूसरे बनती-बिगड़ती जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 20

ब्रजभाषा मथुरा, आगरा, अलीगढ़ आदि जिलों के क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा है, जिसका विकास 'शौरसेनी अपभ्रंश' से हुआ है।

ब्रजभाषा का आरंभिक स्वरूप थोड़ा-बहुत सिद्ध-नाथ साहित्य में मिलता है, जिसमें 'पिंगल' रूप प्रचलित था। जैन व रासो काव्यों में इसकी उपस्थिति है।

अमीर खुसरो कृत 'खालिकबारी' में ब्रजभाषा की स्पष्टता मिलती है-

जैसे - "काहे को बिराये परदेस, सुन बाबुल मोरे
भैया को दीने महला दुमहला
हमको दीन्ही परदेस, सुन बाबुल मोरे"

इसमें रेखांकित शब्द ब्रजभाषा को प्रदर्शित करते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग,
तन मेरो मन पीउ को, दोउ भए एक रंग।"

यह ब्रजभाषा के बढ़ते हुए कदम को दर्शाता है।

इसके अलावा सांस्कृतिक व सामाजिक कारणों ने ब्रजभाषा को चरमस्तर पर पहुँचाया। गौड़ीय सम्प्रदाय व पुष्टिमार्ग की स्थापना के साथ ब्रजभाषा में साहित्य लेखन का विकास हुआ, कृष्णभक्ति काव्यधारा में इसका उत्कर्ष दिखाई पड़ता है।

'अष्टछाप' की स्थापना से ब्रजभाषा के विकास को अतुलनीय गति मिली - कुंभनदास, नंददास, भिखारीदास आदि ने भरपूर साहित्य लिखा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रजभाषा की कोमलकांत शब्दावली, मधुरता व गेयता ने श्रृंगार व वात्सल्य का वर्णन को ऊँचा कर दिया, एवं 'सूरदास' को इन क्षेत्रों में ऐतिहासिक प्रमुखता व प्रसिद्धी हासिल की। 'सूरदास' का समय ब्रजभाषा के परमोत्कर्ष का समय था -

'घुटरनि चलत, रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किये ....।"

इन पंक्तियों में ब्रजभाषा की बिम्बात्मकता, सहृदयता शक्ति उजागर होती है।

"निर्गुन कौन देस को बासी ?
को है जनक जननी को कहियत, कौन नारी को दासी।"

पंक्तियों में 'वाद - विवाद' चेतना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को भी ब्रजभाषा में प्रस्तुत किया गया है।

रीतिकालीन आगमन में भी ब्रजभाषा कविताओं में एकमात्र विकल्प बन गयी थी लेकिन भारतेन्दु युग व द्विवेदी युग के आगमन के पश्चात ब्रजभाषा की नींव हिलने लग गयी थी और खड़ी बोली ने न केवल गद्य बल्कि पद्य पर भी अपना अकल्पनीय अधिकार जमा लिया, फलतः ब्रजभाषा फिर से क्षेत्रीय भाषा बनकर रह गयी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सर्वनाम का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए सर्वनाम के विभिन्न भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहा जाता है, इनका प्रयोग संज्ञाओं जैसे नाम, स्थान आदि के बार-बार प्रयोग से बचने व वाक्यों को लघुरूप व सुन्दर बनाने के लिए किया जाता है।

सर्वनामों का उद्भव अपभ्रंश व अवहट्ट आर्य भाषाओं के 'तुम्हें' से हुआ है और भाषायी प्रक्रिया से गुजरते हुए, मानकीकृत रूप धारण किया है।

भेदों के हिसाब से, सर्वनाम के छः भेद माने गये हैं, जो वाक्य में उसी अनुरूप में प्रयुक्त

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान ... कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this ...)

होते हैं, जिसमें उनका सम्बन्ध निर्धारित किया गया है।

सर्वनाम

पुरुषवाचक निजवाचक निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक

सम्बन्धवाचक प्रश्नवाचक.

पुरुषवाचक सर्वनाम हिन्दी भाषा में बहुतायत से प्रयोग होता है, इसके तीन भेद माने गए हैं

एकवचन [
- उत्तम पुरुष – मैं, मेरा, मुझे
- मध्यम पुरुष – तुम, तुम्हारा
- अन्य पुरुष – वे, वह, उनका

बहुवचन - तुम्हें, उन्हें, उनके, तुम्हारे इत्यादि.

अतः कोई भी संज्ञा भी पुरुष/स्त्री वाचक होने के भाव को व्यक्त करती है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तो वहाँ पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है, राम पढ़ रहा है।
↓
वह पढ़ रहा है।

निश्चयवाचक सर्वनाम में स्वयंबोध होता, जिसमें किसी वस्तु का संबंध इंगित किया जाता है। "~~यह मेरी पुस्तक है~~
मैं बाजार जा रहा हूँ।

संबंधवाचक सर्वनाम में किसी वस्तु का व्यक्ति से संबंध बताया जाता है। जैसे – "यह साईकिल श्याम की है।"

प्रश्नवाचक सर्वनामों क्या, क्यों, कैसे, कहाँ आदि का प्रयोग किया जाता है – 'तुम कहाँ जा रहे हो?'

इसी प्रकार अन्य सर्वनामों के प्रयोगों ने हिन्दी व्याकरण के विकारी पदों की उपयोगिता व भाषा की वैज्ञानिकता प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

अपभ्रंश मध्यकालीन आर्य भाषा के विकास की तीसरी अवस्था है, जिसका विकास संस्कृत के विकृत रूप से माना जाता है।

अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं में सभी विकारी व अविकारी पदों का वर्णन मिलता है।

संज्ञा के सभी प्रकार के भेद मिलते हैं; जैसे जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, ~~भाववाचक~~ इत्यादि।

कारकों में ~~निर्विभक्तिक~~ निर्विभक्तिक प्रयोग मिलता है,

कर्म कारक में 'कुँ'

व सम्बन्ध में 'स, तऊ, तै'

इत्यादि का विकास।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वनामों में 'उन्हें' सर्वनाम का विकास भी आज भी प्रचलित है।

वाक्यों की भव्यता देने के लिए कारकों व क्रियाओं में 'हिं' विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

लिंग दृष्टि से अपभ्रंश में दो ही लिंग मिलते हैं, - पुल्लिंग व स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग प्रायः पुल्लिंग में शामिल कर लिया गया।

वचन दृष्टि से 'अपभ्रंश' में दो वचन ही मिलते हैं न कि संस्कृत की तरह तीन वचन। एकवचन व बहुवचन, द्विवचन की प्रमुखता को समाप्त कर दिया गया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेषणों की दृष्टि से भी अपभ्रंश में महत्वपूर्ण विकास हुआ। प्रमुखतः संख्यावाची विशेषणों को -

नौ, दस, बीस, अट्ठारह इत्यादि।

उदाहरण 'नौ लख पातरि आगे नाचै'..

एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए 'उ', 'न्हि' आदि प्रत्ययों का प्रयोग।

अतः स्पष्ट है कि अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं से ही अन्य आर्यभाषाओं जैसे खड़ी बोली, अवधी व ब्रज की आरंभिक पृष्ठभूमि तैयार हो पायी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा के विकास में बोलियों का सम्बन्ध बहनों जैसा रहा है न कि माँ-बेटी जैसा। क्योंकि भाषिक विकास एक स्वतंत्र प्रक्रिया न होकर, सम्मिलित व विभिन्न क्षेत्रों की बोलियों के मेलेपन से होता है, इसलिए इनमें आपस में कुछ समानताएँ व थोड़ी असमानताएँ विद्यमान होती हैं।

ऐसा ही स्वरूप 'पूर्वी' व 'पश्चिमी' हिन्दी की दो प्रमुख बोलियों 'ब्रज' व 'अवधी' में मिलता है।

इनके स्वरूप को उदाहरणों से बेहतर समझा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जा सकता है, जैसे अमीर खुसरो कृत 'खालिकबारी' व उनकी अन्य कविताओं में दोनों बोलियों का मिश्रण मिलता है।

"मेरो मोसे सिंगार करावत, आगे बैठे मान बढ़ावत
वाके चिक्कन कोई न डीला, क्यों सखि! साजन?
ना सखि शीशा।"

क्रिया का 'त' रूप अवधी व ब्रजभाषा में दोनों में मिलता है। इसी प्रकार 'मेरो' 'मोसे' आदि भी।

समानताएँ

- क्रिया के रूप वर्तमान जैसे चलत, खेलत
- सर्वनामों में समानता 'मेरो',
- इसके साथ शब्दावली के तौर पर भी समानताएँ, कुछ शब्द होते हैं जो दोनों में प्रयुक्त होते हैं → बरखा, बदन इत्यादि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'व' का 'ब' रूप, 'ड का ड़' व्यापार

लगर दोनों में समान है।

अवधी ~~आकारांतबहुला~~ आकारांत बहुला भाषा है, प्रनामा, पूरनकामा इत्यादि

जबकि ब्रज ईकारांत व एकारांत बहुला भाषा है।

ब्रजभाषा का प्रयोग 'शृंगार' व वात्सल्य' जैसे रसों के वर्णन के लिए उपयुक्त होता है, और इसी कारण से ब्रजभाषा मध्यकालीन कृष्णभक्तिकाव्यधारा, रीतिकाल में अपना अधिकारक्षेत्र बनाए रखी।

जबकि 'अवधी' मर्यादापूर्ण व औदात्य से युक्तिपूर्ण होने के कारण, रामभक्ति काव्य धारा में श्रीराम

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

के ~~दास्य~~ मर्यादा पुरुषोत्तम रूप व तुलसीदास जी के दास्य भाव को अपना कर सकी। जायसी द्वारा 'पद्मावत' में अवधी का लोकप्रचलित रूप मिलता है जैसे 'दिवंगत' जल्दी बारिश के लिए प्रयुक्त।

सूरदास – "ऊधौ मन न भए दस-बीस
एक हुतौ सो गयो श्याम संग,
अब को अवराधै ईस।"

जायसी – "मानुष प्रेम भाउ बैकुंठी, नाहिं तो
काह छार एक मूठी।"

तुलसीदास – "सगुनहिं निर्गुनहिं नहिं कछु भेदा,
निर्गुन-सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा।"

अतः दोनों में कुछ विशेषता तो कुछ कमियाँ लेकिन खड़ी बोली ने दोनों को ही रिप्लेस कर दिया है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिंदी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी भाषा का व्याकरण उसके मानकीकृत होने की संभावनाओं को बताता है।

हिन्दी भाषा के मानकीकरण की प्रक्रिया में व्याकरण में विकारी व अविकारी पद को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

चूँकि संस्कृत में तीन लिंग होने का प्रावधान था, यथा स्त्रीलिंग, पुल्लिंग व नपुंसकलिंग / उभयलिंग।

लेकिन मानक हिन्दी में केवल दो ही लिंग माने गए हैं - पुल्लिंग व स्त्रीलिंग

इन दोनों में पारस्परिक संबंध

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है, जैसे 'ई, नी, आनी' आदि प्रत्ययों को जोड़कर पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाया जा सकता है। जैसे -

लड़का + ई = लड़की

ठाकुर + आनी - ठकुरानी,

हिन्दी में नपुंसक लिंग को पुल्लिंग में ही माना जाता है, लेकिन कुछ शब्दों को लेकर अभी भी असमंजस की स्थिति बनी हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विभिन्न देशों में कुछ के नाम को स्त्रीलिंग तो कुछ को पुल्लिंग में माना जाता है जैसे 'भारत' व 'अमेरिका'

इसी प्रकार 'प्रधानमंत्री' व 'राष्ट्रपति' जैसे शब्दों को लेकर। 'प्रधानमंत्री' को पुल्लिंग मान लिया गया है जबकि भाषाविदों में 'राष्ट्रपति' को लेकर अभी भी मत स्पष्ट नहीं हुआ है।

आधुनिकीकरण के दौर में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करना व उनका लिंग चयन करना, समस्त हिन्दी कि लिंग व्यवस्था के लिए नया आयाम जुड़ गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'हरियाणी' बोली का परिचय देते हुए उसकी व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

'हरियाणी' मूलतः कौरवी भाषा का ही एक रूप है, जिसे रोहतक, सोनीपत, जिंद, महेन्द्रगढ़, हिस्सार आदि जिलों में बोला जाता है।

'हरियाणी' बोली 'पश्चिमी हिन्दी' समूह की बोलियों में शामिल है जिसका विकास कौरवी अपभ्रंश से माना जाता है।

इसमें 'ड़ का ड'
बुड्ढा - बुड्डा
लड़का - लडका इत्यादि,

थारो, ~~म्हारे इत्यादि~~ ~~[illegible]~~

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरणिक विशेषताएँ :

हरियाणवी में संज्ञा के रूप में व्यक्ति के नाम में या स्थान में 'ड़' का 'ड' कर दिया जाता है।

कारकों के प्रयोग मता बदलाव आया है, 'सूँ', 'नूँ', वे, 'थम' आदि का प्रयोग किया जाता है।

मैं पढ़ता हूँ - म पढ़ूँ सूँ।

सर्वनामों में तम, (बहुवचन), तू (एकवचन) आदि का प्रयोग किया जाता है।

- तू कद जावेगा।
- तुम कद जावैंगो।

वचन की दृष्टि से दो वचन ही होते हैं लेकिन एकवचन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

से मुकलन के निर्माण में प्रत्ययों में बदलाव आया है।

पुल्लिंग व स्त्रीलिंग दो ही वचन, व स्त्रीलिंग में उच्चारण पुल्लिंग से, ओकारांत मूलक उच्चारण।

"या सड़क बित जावे सा।" यह वाक्य राजस्थानी को ही प्रकाशित करता है जिसमें विभिन्न व्याकरणिक शब्दों बिंदुओं में सम्बन्ध देखा जा सकता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) राजस्थानी हिंदी और उसकी बोलियों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Section–B

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) दिनकर की कृति उर्वशी का प्रतिपाद्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिनकर राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत, समाजवादी मूल्यों से प्रभावित व आत्मास्थिता व लोकास्थिता वाले कवि हैं, 'उर्वशी' उनकी महत्वपूर्ण कृति, जिसने उनको ख्याति दिलाई, इसमें 'पुरुरवा-उर्वशी' की पौराणिक कथा ली गई। पुरुरवा एक राजकुमार है, और उर्वशी स्वर्ग में रहने वाली सौंदर्य से युक्त अप्सरा। पुरुरवा को उर्वशी से प्रेम हो जाता है, उर्वशी धरती पर आना, पुरुरवा को एक पुत्र दे जाती है लेकिन पुरुरवा की अपूर्ण इच्छाओं के चलते यह क्रम चलता रहता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके माध्यम से 'दिनकर' व्यक्ति की सहज यौन इच्छाओं की अभिव्यक्ति को दिखाया है कि कैसे आधुनिक ही नहीं, प्राचीन समय में भी लोग मानवीय मनोविज्ञान व इच्छापूर्तियों में विश्वास रखते हैं।

इस रचना के माध्यम से दिनकर ने नारी परतंत्रता, उसके आत्मसम्मान आदि को व्यक्त किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी उपन्यास का विकास एक ऐसे वातावरण में हुआ जहाँ औद्योगिकरण की शुरूआत, मध्यवर्गीय लोगों का अकेलापन व [illegible]। आदर्शवादी रचनाओं से मोहभंग इत्यादि कारकों ने जन्म लिया।

चूँकि व्यक्ति अपने यथार्थ के बारे में जानना चाहता था इसी कारण उपन्यास विधा प्रचलन में आयी और 'गोदान' 'झूठा सच' जैसे परम यथार्थवादी उपन्यासों ने पाठकों पर गहरा प्रभाव डाला।

वर्तमान समय सूचना प्रसार व प्रौद्योगिकी के विकास ने पाठ्य सामग्री के आदान-प्रदान

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

को सत्य बना दिया है और भूमंडलीकरण के दौर में भी काशीनाथ सिंह का 'काशी का अस्सी' आदि लेखक उपन्यास लिखकर उपन्यास धारा को जीवित कर दिया है।

वर्तमान समय में 'चेतन भगत' जैसे लेखकों, व विचार विमर्शों की विविधता ने दलितों, स्त्रियों व समलैंगिक को प्रोत्साहित करने वाले विचारों एवं पर्यावरण संकट जैसी समस्याओं ने प्रासंगिकता बना दी।

लेकिन मनोरंजन के बढ़ते साधनों व चलचित्र के बढ़ते हुए कदमों ने उपन्यासों की गति पर रोक लगा दी लेकिन प्रासंगिकता पर नहीं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) हिंदी गद्य के विकास में बालकृष्ण भट्ट का योगदान

बालकृष्ण भट्ट, द्विवेदीयुगीन साहित्य के महत्वपूर्ण साहित्यकार रहे हैं इन्होंने न केवल गद्य में लेखन कार्य किया बल्कि 'निबंध' लेखन परंपरा में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक निबंध लिखकर नवजागरण की भावना को पैदा किया।

1877 ई० में प्रकाशित 'हिन्दी प्रदीप' नामक मासिक पत्रिका में इन्होंने विचारप्रधान व समसामयिक समस्याओं व उनके समाधान हेतु

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुछ निबंध लिखे।

इनके द्वारा कृत ललित निबंध 'साहित्य का विकास और देश में संबंध' एक महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक विश्लेषणात्मक निबंध है। उन्होंने अन्य निबंध संकलन जैसे 'माधुरी कुंज' आदि लिखे।

खड़ी बोली को गद्य की भाषा बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रामचंद्रिका की संवाद-योजना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'केशवदास' द्वारा कृत 'रामचंद्रिका' भले ही प्रबंधता की दृष्टि से बेतरतीब हो लेकिन संवादों की दृष्टि से हिन्दी साहित्य की अप्रतिम रचना बन गई है। इसमें उन्होंने राम की कथा का वर्णन किया है, और एक ही वाक्य में बहुत सारे सवाल-जवाब को शामिल करके चमत्कारिता पैदा की है।

"मातु! कहा गये नृपतात? गए सुरलोकहिं; क्यों? सुत शोक लिए।"

यह कैकेयी-भरत संवाद, केशवदास के पांडित्य व

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लोकहीय महत्ता को दर्शाता है।

केशवदास ने 'संवादों को छोटे, चुस्त व गतिशील बनाने के साथ रोचक बना दिया है।

आ० शुक्ल ने इस संवाद योजना की खूब तारीफ की है कि "केशवदास की संवाद-योजना हिन्दी साहित्य की एक अप्रतिम रचना है।" जिसमें 'तुलसी - अंगद संवाद', 'लक्ष्मण - रावण' संवाद आदि में चमत्कारिता व रोचकता दिखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) कहानी का रंगमंच

वैसे तो साहित्य में रंगमंच, नाटक विधा के लिए माना जाता है लेकिन कुछ लेखकों जैसे 'प्रेमचंद' आदि ने नाटकीय तनाव के साथ ऐसी कहानियाँ लिखीं जिनका रंगमंच सफलतापूर्वक किया जाता रहा है।

उनकी कहानियों में 'कफ़न' 'सद्गति', 'पूस की रात' आदि का मंचन प्रसिद्ध है।

अन्य रचनाकारों में प्रसाद द्वारा कृत 'आकाशदीप' व 'पुरस्कार' का मंचन भी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किया गया है।

चूँकि कहानियों में भी वातावरण की न्यूनता, संवादों की भूमिका व पात्रों की उपस्थिति कम होती है इसलिए बिना ज्यादा संसाधनों के इनका सफल मंचन किया जा सकता है। राष्ट्रीय नाट्य ~~अकादमी~~ अकादमी व इप्टा ने भी कई कहानियों के मंचन में भागीदारी दिखाई है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'पृथ्वीराजरासो' को 'ट्रैजिडी' मानना कहाँ तक उचित है? तर्कसम्मत उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) खड़ी बोली हिंदी गद्य के विकास में 'कविवचन सुधा', 'हिंदी प्रदीप' और 'ब्राह्मण' पत्रिका के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रीतिकालीन काल में ब्रज भाषा गद्य व पद्य दोनों पर अपना अधिकार जमाए हुए थी लेकिन भारतेन्दु युग के आगमन से 1850-1900 ई. के मध्य जो भाषायी द्वैत चल रहा था कि संस्कृतनिष्ठ या फारसीनिष्ठ या ब्रज भाषा खड़ी बोली को समाप्त कर दिया।

भारतेन्दु द्वारा संपादित 'कविवचन सुधा' में उन्होंने गद्य में खड़ी बोली का प्रयोग

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किया और 'हिन्दी नये चाल में ढली' लिखकर खड़ी बोली की ~~हिन्दी में~~ हिन्दी में प्रसिद्धी को स्थापित किया है।

भारतेन्दुयुग में हिंदाडिली काव्य साहित्य लिखा गया जहाँ साहित्यकारों ने अपने भावों व हास्य-व्यंग, जैसे प्रतापनारायण मिश्र आदि ने खड़ी बोली का सरलता के साथ प्रयोग किया।

~~कविवचनसुधा~~

'कविवचन सुधा' में अंग्रेजों की दमनकारी शासन, व भारत की कुसुप्त जनता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में नवजागरण की चेतना को प्रकट किया है।

प्रतापनारायण मिश्र द्वारा प्रकाशित 'ब्राह्मण' पत्रिका में उनके विचारात्मक व भावप्रधान निबंध लिखे गए हैं। इसमें उनका प्रसिद्ध कथन "~~बक्क बक्क~~ पचीदास्श हमारी फागुन की है अगर कोई हँसी-मजाक कर लें तो बुरा न मानना।"

इस वाक्य ने भारतेन्दुयुग की जिंदादिली को स्थापित कर दिया।

'बालकृष्ण भट्ट' द्वारा लिखित 1977 ई. में 'हिन्दी प्रदीप'

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मासिक पत्रिका थी जिसके माध्यम से इन्होंने बुद्धिजीवी लोग, सैद्धान्तिक विचारधाराओं का चिंतन-मनन व 'निबंध' लेखन शैली का आरंभ किया जो आगे चलकर आ. शुक्ल के हाथों से परिमार्जित हुई।

अतः इन पत्रिकाओं ने गद्य के क्षेत्र में मौलिक प्रयोग किए व खड़ी बोली का एक आरंभिक परिष्कृत लेखन स्वरूप दिया। द्विवेदीयुग में इन्हीं प्रयासों की वजह से गद्य व पद्य दोनों में खड़ी बोली का अधिकार हो सका।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दिनकर की काव्यकृति 'रश्मिरथी' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दिनकर की ऐतिहासिक दृष्टि वहां जाती है जहां समाज का कोई उपेक्षित, हाशिये पर स्थित व्यक्ति के साथ भेदभाव हुआ हो। वे इतिहास का भेदभाव के प्रमाणों का साक्षी मानते है।

'रश्मिरथी' में 'कर्ण' के साथ हुए भेदभावों को दिखाया है कि कैसे जाति, वर्ण की समस्या ने व्यक्तियों की महानता को अस्वीकार कर दी। अर्जुन व कर्ण, प्रतियोगिता में कर्ण, अर्जुन को हरा देता है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेकिन निम्न वर्ण का होने के कारण उसे क्षत्रिय नहीं माना जाता है। 'परशुराम' के आश्रम में 'कर्ण' ब्राह्मण बनकर शिक्षा ग्रहण करते जाते हैं लेकिन पता चलने पर परशुराम, उसे ब्रह्मास्त्र का समय आने पर भूल जाने का श्राप दे देते हैं।

इसी दुविधा को जमा करने के लिए 'दिनकर' ने लिखा है,

"मैं रथ का टूटा पहिया,
लेकिन मुझे फेंकना मत,
कि सहसा द्वन्द्व पड़ जाने पर
मेरा सहारा लोगे।"

अतः समाज से अलग हुए उन व्यक्तियों की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रासंगिकता की दिनकर ने 'रश्मिरथी' में अपनी समाजवादी विचारधारा व मनोवैज्ञानिक चेतना के माध्यम से मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।

उनकी अन्य कृतियों जैसे 'कुरुक्षेत्र' व 'उर्वशी' आदि में भी वे मानवीय मूल्यों को प्रतिस्थापित करने में प्रतिबद्ध नजर आते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी कहानी में उपस्थित जादुई यथार्थवाद पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जादुई यथार्थवाद का अर्थ है यथार्थ को दिखाना लेकिन वह सत्य नहीं है।

अर्थात् जो सत्य नहीं है उसे सत्य दिखाना। पश्चिमी साहित्य में गार्सिया मार्केज द्वारा इसका प्रयोग किया गया, शुरुआत में यह काफी प्रभावी लगा।

हिन्दी साहित्य में कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में जादुई यथार्थवाद का प्रयोग किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उनकी कहानियों में विभिन्न
मनोवैज्ञानिक स्थानों को उजागर
करने के लिए व आधुनिक
भाव बोध जैसे निरर्थकता बोध
व अकेलापन के रोचक पनि
[illegible] के लिए जादुई यथार्थवाद
का प्रयोग किया।

लेकिन 1970-80 के दशक
के बाद यह परंपरा हिन्दी
कहानियों में लगभग समाप्त
हो गई।

अमरकांत जैसे लेखकों ने
भी जादुई यथार्थवाद

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

का प्रभाव दिखाने के लिए कई कहानियाँ लिखीं लेकिन पाठकों को जटिलता व आपत्र होने की वजह से इसका प्रचलन नहीं हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation